एक नगरी नगर से दूर

विद्या अर्जन का स्वप्न लिए हम (एस पी ए) भोपाल
की ओर हो लिए,
आते ही आभास हुआ ये हम कहाँ हो लिए,
नगर से दूर एक नगरी बसाने के लिए।

यहाँ गुरु है ज्ञान है मान है अभिमान है,
मित्र सी पुस्तकें है पुस्तकों का अम्बार है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

योजनायें हैं परियोजनायें है,
सीखने की लगन है तो उसे बढ़ाने के लिए,
नित नए आयाम हैं,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

परिसर इसका विस्तृत है बस छोटी सी वास्तु है,
वन्य जीवन का विचरण है प्रकृति का आनंद है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

यहाँ सभी को दोस्त मिले किसी को जीवन साथी भी,
जीवन के यौवन का हर पहलू जगाने के लिए,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

बीहू हो गरबा हो लोढ़ी हो या बैसाखी,
ओणम उगादी गुडी पडवा, होली हो या दिवाली,
सभी उत्सवों के आनंद का समागम है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

विद्या अर्जन का स्वप्न लिए हम (एस पी ए)
भोपाल की ओर हो लिए,
अब हमें यह भान, हम सही हो लिए,
क्योंकि, बस इतना ही काफी है,
एक नगरी बसाने के लिए।

डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर
सहायक प्राध्यापक